अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

खुरदरे जीवन की भावुक कहानियां

डॉ कपिल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
महर्षि मार्कण्डेश्वर (मानक विश्वविद्यालय)

“कहानियों को हर हाल में सुना जाना चाहिए। कहानियाँ अगर अनसुनी ही दफ्न हो जाएं तो बेचैन रूहों की तरह भटकती रहती हैं।”

उपरोक्त कथन हरभगवान चावला के नवप्रकाशित कहानी संग्रह ‘बाँसुरी तथा अन्य कहानियाँ’ के प्रारंभ में दिया गया है। क्या यह कथन लेखक की उस मानसिकता को दर्शाता है जिसमें स्वयं के कथाकार के प्रति मोह होता है या यह पाठकों के प्रति आग्रह है कि उनकी (चावला जी की) कहानियाँ पढ़ी जानी चाहिए या फिर यह कथन हिन्दी कहानी की ही नहीं बल्कि कहानी की उस लम्बी व समृद्ध परम्परा की तरफ इशारा करता है जो दादी-नानी की कहानियों से लेकर जातक कथाओं और दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों व सभ्यताओं में निहित हैं। यह प्रश्न जितना सहज दिखाई देता है इसका जवाब उतना ही दुष्कर हो सकता है। खैर, इसका जवाब हम पाठकों के विवेक पर ही छोड़ देते हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार हरभगवान चावला का नया कहानी संग्रह आधार प्रकाशन से आया है। इससे पूर्व 2014 में उनका पहला कहानी संग्रह ‘हमकूँ मिल्या जियावनहारा’ आया था जिसने पाठकों के हृदय में थोड़ी हलचल मचाने की कोशिश जरूर की थी। यहाँ ‘हृदय’ शब्द बहुत विशेष हो जाता है क्योंकि इसका सीधा संबंध मनुष्य की भावुकता से है। और इस सनातन प्रश्न को हम छोड़ते हुए चलेंगे कि साहित्य के लिए हृदय कितना महत्त्वपूर्ण होता है। क्या हरभगवान चावला जी की कहानियाँ भावुकता का चरम पैदा करती हैं और पाठकों को एक ऐसी स्थिति में छोड़ जाती हैं जहां सिवाय आंसुओं या आहों के कुछ नहीं होता ? क्या चावला जी की कहानियाँ यथार्थ के विपरीत भावुकता का निर्माण करती हैं और क्या जहां भावुकता होगी वहाँ यथार्थ की ठोस जमीन नहीं हो सकती। हम नए संग्रह में शामिल कहानियों के संदर्भ में ही इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने की कोशिश करेंगे। हिन्दी आलोचक नामवर सिंह ने 70 के दशक में नई कहानी आंदोलन के परिपेक्ष्य में बात करते हुए उन कहानियों की तीखी आलोचना की थी जिनमें कथ्य भावुकता लिए हुए था। इसमें विष्णु प्रभाकर व द्विजेन्द्रनाथ निर्गुण जैसे कहानीकार शामिल थे। इस संबंध में नामवर सिंह एक प्रश्न का जवाब देते हुए कहते हैं – “....उस समय कई पुराने लेखक, जैसे निर्गुण और विष्णु प्रभाकर, बड़ी भावुकतापूर्ण कहानियाँ लिख रहे थे। मैंने बताया कि भावुकता क्या होती है और यथार्थ से उसका विरोध क्यों होता है। इसी सिलसिले मे मैंने उनकी कहानियों की आलोचना की और उषा प्रियवंदा की वापसी की विस्तार से व्याख्या की। मैंने कहा कि छायावादी भावुकता कविता में गलत है तो कहानी में कैसे सही है।”[1] यद्यपि नामवर सिंह भावुकता के विरोध में यह बात वर्षों पहले कर रहे हैं लेकिन आज की कहानियों के संबंध में भी यह सटीक बैठता है। कोरी भावुकता सिर्फ विरेचन पैदा कर सकती है, साहित्यिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

विमर्शों से उसका कोई लेना देना रह नहीं जाता। वह मात्र लोककथा बनकर रह जाती है जिन्हें दादियाँ अपने पोते-पोतियों को सुलाने के लिए सुनाया करती हैं और प्रेमचंद को संदर्भित करते हुए कहें तो और ज्यादा सोना ठीक नहीं है। ये कहानियाँ बालमन पर तो प्रभाव छोड़ सकती हैं लेकिन एक वयस्क पाठक 'एक कान से सुनकर दूसरे से बाहर' कर देता है। परन्तु फिर एक कहानी की स्मृति उभर आती है। हरभगवान चावला की कहानियों पर जाने से पहले इस कहानी का जिक्र यहाँ होना महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि मैं पाता हूँ कि यह कहानी चावला जी की कहानियों की 'पूर्वज कहानी' है। और वह कहानी है 'उसने कहा था'। चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी की यह कहानी हिन्दी कहानी की परम्परा में अपना विशेष स्थान रखती है और भावुकता से लबरेज भी है और इसके अलावा नामवर सिंह जैसे आलोचक; जो कहानियों में भावुकता का विरोध करते हैं, ने इसकी भरपूर प्रशंसा भी की है। हालांकि यह बात दिमाग में रखना बहुत आवश्यक है कि गुलेरी जी की यह कहानी उस समय की है जब हिन्दी कहानी की यात्रा शुरू ही हुई थी। इसके अलावा यह कहानी विशेष इसलिए हो गई थी कि यह अपने से आगे देखती है मतलब इसकी भाषा, इसका कथ्य, इसके भीतर समाई हुई भावुकता उस समय के हिसाब से बहुत आगे की चीजें थी, मैच्योर थी। इसलिए यह कहानी भावुकता मिश्रित होने के बावजूद भी सराही गई है। 'उसने कहा था' का परिदृश्य उस समय के पंजाब को दिखाता है और हरभगवान चावला की बहुतेरी कहानियाँ भी इसी प्रकार के विभाजित पंजाब की कहानियाँ कहती हुई दिखाई देती हैं। 'उसने कहा था' युद्ध की विभीषिका व प्रेम में त्याग को परिभाषित करती है तो चावला जी भी विभाजन की विभीषिका व प्रेम के अनेक रंगों को अपनी कहानियों का विषय बनाते हैं। इसलिए मैंने 'उसने कहा था' कहानी को हरभगवान चावला की कहानियों की पूर्वज कहानी माना है। यह बात दीगर है कि बावजूद इसके गुलेरी जी हरभगवान चावला के "कहानीकार पुरखे" साबित नहीं होते।

प्रस्तुत कहानी संग्रह 'बाँसुरी तथा अन्य कहानियाँ' में कुल सत्रह कहानियाँ संकलित हैं जिनमें से आरंभ की ज्यादातर कहानियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और आखिरी की कुछ कहानियाँ सिर्फ फीलर यानि संग्रह को ज्यादा पन्नों का बनाने के लिए इस्तेमाल की गई लगती हैं। खैर, इन सत्रह कहानियों में जो पहली कहानी है उसका शीर्षक है 'सैलाब'। कहानी संग्रह का आरंभ एक ऐसी कहानी से किया गया है जो पाठकों के हृदय को चीर कर रख देती है। यह विभाजन की एक ऐसी दास्तान है जिसके एक छोर पर स्त्री की पीड़ा मौजूद है तो दूसरे छोर पर विस्थापन की त्रासदी और ये दोनों ही स्थितियाँ एक दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं। हालांकि कहानी को खत्म करते करते पाठक बेहतर महसूस करने लगता है और आदर्श अंत पाकर वाह करने की पुरजोर कोशिश करता है लेकिन कर नहीं पाता क्योंकि इस लंबे समय की कथा के प्रारंभ में ही कुछ ऐसे दृश्य हैं जो उसकी चेतना में लगातार बने रहते हैं और यही एक कहानी की सफलता का मापदंड है। 47 में हुए भारत-पाक विभाजन को हिन्दी कथा साहित्य में लगातार जगह मिलती रही है लेकिन 'सैलाब' कहानी बाकी कहानियों से इस मायने में अलग है कि इसमें बिछुड़े भाई बहन को जिन स्त्रोतों के माध्यम से मिलवाया गया है वो नई दुनिया (21 वीं सदी) के स्त्रोत हैं। वीडियो कॉल और यूट्यूब जैसे माध्यमों का प्रयोग लेखक की जागरूकता का प्रमाण कहा जा सकता है और यह यथार्थ के धरातल पर एकदम प्रासंगिक भी है। एक ऐसे समय में जब सांप्रदायिकता अपने चरम पर है ऐसी उम्मीद से भरी कहानी पाठकों के मन मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ जाती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

इस संग्रह की दूसरी कहानी ‘चमगादड़ों की बस्ती’ बहुत कमजोर कहानी है। इसमें लेखक क्या कहना चाह रहा है यह अंत तक पता ही नहीं चलता। यह एक ऐसी कहानी है जिसमें कहानी का मुख्य किरदार ‘चौधरी’ किसी दूसरी तीसरी दुनिया का किरदार लगता है; जो स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस के प्रति इतनी दीवानगी रखता है कि अपनी जिंदगी झंड कर लेता है व एकदिन गाँव से लापता हो जाता है। यह आज के समय में संभव नहीं लगता। यद्यपि लेखक इस लम्बी कहानी के कथानक को बांधे रखता है फिर भी कुछ सिरे पाठक से छूटते चलते हैं। आखिर में लेखक स्वयं इस कहानी का पात्र बनकर आता है जो सिर्फ विगलित भावुकता का ही सृजन कर पाता है। यह कहानी एक ग्रामीण व्यक्ति के मनोविज्ञान को व्यक्त करने की कोशिश करती है लेकिन वहाँ भी पाठक को निराशा ही हाथ लगती है।

प्रस्तुत कहानी संग्रह की तीसरी कहानी ‘बाँसुरी’ है जिसके नाम पर संग्रह का नाम भी रखा गया है। इसका अर्थ है कि यह कहानी लेखक की नजर में बाकी सभी कहानियों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। यह अपेक्षाकृत लम्बी कहानी है। इस लंबी कहानी की मुख्य पात्र एक स्त्री है जिसका नाम है मीरा। मीरा का जीवन विवाह से पहले बहुत अलग होता है और विवाहोपरांत उसकी जिंदगी पूर्णतः बदल जाती है। उसका पति एक तथाकथित धार्मिक व्यक्ति है (मंदिर का पुजारी) जिसकी मानसिकता वही है जो किसी भी धार्मिक व्यक्ति की हो सकती है। वह स्त्रियों के प्रति अनुदार तो होता ही है बल्कि एक स्त्री के मन को समझने की क्षमता भी उसके अंदर नहीं है। कहानी लंबी है और एक स्त्री के जीवन को परिभाषित करने व उसके मन के आंतरिक संघर्षों को बखूबी बयां करती है। वह यह दिखाती है कि एक स्त्री के जीवन में जब प्रेम आता है तो वह उसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है। यह कहानी स्त्री के रेगिस्तान होने से लेकर उस पर उगे प्रेम के छोटे से पौधे तक की यात्रा की कहानी है। जो प्रेम उसे अपने पति से नहीं मिला वह किसी ओर में खोज लेती है और उसी की स्मृति के सहारे अपना बाकी का जीवन व्यतीत करने की इच्छा व्यक्त करती है। लेखक ने बाँसुरी और मीरा के प्रतीकों की जो व्यवस्था इस कहानी में की है वह इसे ‘पॉइटिक टच’ देता है (चूंकि लेखक एक प्रसिद्ध कवि भी हैं)। सही मायनों में यह एक बेहतर कहानी है और मेरी दृष्टि मे लेखक ने संग्रह का शीर्षक इस कहानी से सही ही किया है।‘बाँसुरी’ कहानी समाप्त होते होते पाठक हरभगवान चावला के साथ सुरताल करने लगेगा, ऐसी उम्मीद बेमानी नहीं हो सकती।

इसके बाद की कहानी है ‘लौटते हुए’। इस कहानी को पढ़ते हुए महसूस होता है कि हरभगवान चावला का कथाकार भावुकता में निहित खुरदुरे जीवन से अपने कथ्य सृजित करता है और पाठकों के सामने परोस देता है और यह तो सर्वविदित ही है कि हिन्दी के बहुतेरे पाठक भी अपनी ‘आहों’ से कागज गीले करने को ही कहानियाँ पढ़ते हैं। यद्यपि यह कहानी जीवन से सीधे इस रूप में जुड़ी हुई है और इस कहानी को लेखक ने अंत तक इतना साधे रखा है कि इसकी भावुकता बहुत ज्यादा खलती नहीं है। इसमें कहानी की मुख्य पात्र जब बरसों बाद अपने घर लौटती है तो एक साधारण इंसान की तरह अपने स्वर्णिम अतीत को सोचती हुई आती है जो अब विखंडित हो चुका है। जब उसका स्वप्न टूटता है और हकीकत की खुरदरी जमीं पर पैर पड़ते हैं तो स्वाभाविक रूप से वह खुद भी टूट ही जाती है। कहानी के अंत को लेखक कुछ सुधार कर एक आदर्श स्थापित करने की कोशिश करता है लेकिन तब तक कहानी नोस्टेलजिया की शिकार

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

तो हो चुकी ही होती है। बेशक यह कहानी जीवन के विभिन्न प्रसंगों से जुड़ी हुई है लेकिन इसमें इतना रोना धोना हो जाता है कि एक परिपक्व पाठक इरिटेट हो सकता है।

इस संग्रह की एक कहानी है 'दया धर्म का मूल है उर्फ कुत्ता कथा'। यह कहानी बाकी कहानियों से अलग धरातल पर खड़ी हुई है। इसमें कुत्ता कथा के माध्यम से मनुष्य के कुत्ते होते जाने की विवशता को जाहिर किया गया है। यह इस विषय में तो भिन्न है ही कि ज्यादा गहरे यथार्थ की कहानी है बल्कि इस रूप में भी कि यह शहरी जीवन में घटित हो रही विडम्बनाओ को भी दर्शाती है चूंकि चावला जी की ज्यादातर कहानियों के कथ्य गाँव से संबंधित होते हैं। यह कहानी गिरती मनुष्यता और ऊपर उठते दंभ को परिभाषित करती हुई दिखाई देती है। बीच बीच में ऐसे प्रसंग भी आते हैं जो पाठक के अंतर्मन को झकझोर जाते हैं व व्यवस्था के प्रति ऐसे गुस्से से भर जाते हैं जिसका कोई समाधान फिलहाल नजर नहीं आता। इसमें सिर्फ मनुष्यता का क्षरण ही नहीं है बल्कि व्यवस्था जिसे 'हम भारत के लोग' नहीं बल्कि राजनीतिक शक्तियां स्थापित करती हैं; की विडंबना भी देखी जा सकती है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि मनुष्यता के निर्माण में इसी व्यवस्था का हाथ ज्यादा होता है और यह कहानी इस मायने में पाठकों के सामने बहुत कुछ छोड़ जाती है।

इस संग्रह में एक ओर महत्त्वपूर्ण कहानी है 'किश्तियाँ' जिसका यहाँ जिक्र करना बहुत जरूरी समझता हूँ। इस कहानी का आरंभ इस विज्ञापन से होता है "भूमिहीन खेतिहर मजदूर के लिए कुँवारी, परित्यक्ता, विधवा कैसी भी वधू चाहिए। शादी एकदम सादा, शादी का सारा खर्च वर पक्ष की ओर से होगा। अगर जरूरत हुई तो माता पिता को उचित मुआवजा भी दिया जाएगा।" इस वाक्य में कहानी का सार छिपा हुआ है। इस वाक्य में सुक्खी मजदूर है जिसके पास न तो जमीन है, न पैसा धेला है और न ही घर चलाने के लिए औरत है। यह एक ऐसी विडंबना है जिसको पंजाब से लेकर के हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और यहाँ तक कि बंगाल के गरीब दिहाड़ी मजदूरों के माथों की सिलवटों में स्पष्ट देखा जा सकता है। यहाँ कहानी में इस विडंबना के अलावा एक ऐसी स्त्री के मनोविज्ञान को भी दिखाया गया है जो मोल की स्त्री है। शादी किसी ओर से होती है और सुहागरात कोई दूसरा मना लेता है जिसके बाद वो दुल्हन जिस प्रकार से अपने दृढ़ व्यवहार का परिचय देती है वह सुखद तो प्रतीत होता है लेकिन साथ ही साथ अविश्वसनीय भी क्योंकि अपने ब्याहता को छोड़कर सुहागरात मनाने वाले को अपनाना बहुत कठिन होता है। इस कहानी का कथानक न केवल गरीबी के मारे मजदूरों के जीवन को दिखाता है बल्कि उनकी स्त्रियों के जीवन की त्रासदी को भी बयां करता है। हालांकि यह भी वस्तुगत सच्चाई है कि अंत में कहानीकार अपने चिरपरिचित अंदाज में आदर्श स्थापित करने की कोशिश करता है जो आम जनजीवन की सच्चाईयों से कोसों दूर है या कम से कम दुर्लभ जरूर है।

इन कहानियों के अलावा भी इस संग्रह में कुछ छोटी बड़ी कहानियाँ हैं जो अपेक्षाकृत ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। 'ले प्रधान बीड़ी जला', 'ख्वाहिशें', 'मुझे तुमसे मिलना है इसी वक्त', 'घोड़ा घास नहीं खाता', 'मृत्यु धन' आदि जैसी आधा दर्जन कहानियाँ अपनी उपस्थिति भर दर्शाती हैं। असल में, इस कहानी संग्रह का निचोड़ शुरू की छः सात कहनियों में ही निकल आता है। एक कहानी जिसका शीर्षक है पानी का यहाँ जिक्र करना जरूरी हो जाता है क्योंकि कथ्य की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण बन पड़ी है। इस कहानी में एक ऐसी चरित्र है जो आशा और उम्मीद से भरा हुआ होता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

है तथा पानी के महत्त्व को पूरी दुनिया को बताना चाहता है। यद्यपि आखिरकार वो राजनीतिक दुश्चक्रों से हार जाता है और सुसाइड कर लेता है। इस कहानी का अंतिम पहरा जो सुसाइड नोट होता है; इस प्रकार है – "माननीय प्रधानमंत्री जी आज के बाद मैं पत्र लिखकर कभी आपको परेशान नहीं करूंगा। मैं जान गया हूँ कि जनता की आकांक्षाओं और सत्ता की प्राथमिकताओं के बीच धरती और आसमान का फासला होता है , जिसे कभी पाटा नहीं जा सकता। मुझे आपसे बहुत उम्मीदें थी, पर.... लगता है हम आदिम युग में लौट गए हैं, जहां किसी तरह अपने को बचाये रखना ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि रह गया है। एक बात का संतोष जरूर है कि मैं उस वक्त दुनिया से विदा ले रहा हूँ, जब पीने के लिए पानी अभी बचा हुआ है।" यह अकेला गद्यांश ही पूरी कहानी को बयां करने के लिए काफी है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह तो कहा ही जा सकता है कि हरभगवान चावला इस समय के महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं जिनकी कहानियों को पढ़ा जाना चाहिए।